मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 17, अंक 12 दिसंबर 2012

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह का श्री कपिल सिब्बल द्वारा उद्घाटन 2
'किताबें'—नई दिल्ली में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह समारोह का आयोजन 2
पत्रकार एवं सामाजिक सक्रियतावादी रामी छाबड़ा के संस्मरण का लोकार्पण 3
'पॉल सर्वेज इन मीडिया : ऐन इंडियन पर्सपेक्टिव' पुस्तक का लोकार्पण 3
त्रिची पुस्तक मेला 4
प्रकाशक सम्मेलन 4
अलीगढ़ पुस्तक मेला 4
फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला 5
कन्नड़ सलाहकार समिति की बैठक 5
मलयालम सलाहकार समिति की बैठक 5
पुस्तक समीक्षा 6
समन्वय : आईएचसी भारतीय भाषा महोत्सव 7
मेवात में 'कहानी से नाटक तक' 7
बांग्ला लेखक सुनील गंगोपाध्याय नहीं रहे 7
पठन-आदत के लिए अभियान—'किताबें' 7
चिट्ठीघर 8
सेवानिवृत्ति 8
दिल्ली-एनसीआर में एनबीटी की पुस्तक प्रदर्शनियाँ 8

नवीनतम प्रकाशन

समय के बारे में

बाल फोंडके; अनु. : धीरेन्द्र राय

पृ. 196 ₹ 110

पूर्वोत्तर राज्यों में पाठकवर्ग का सर्वेक्षण

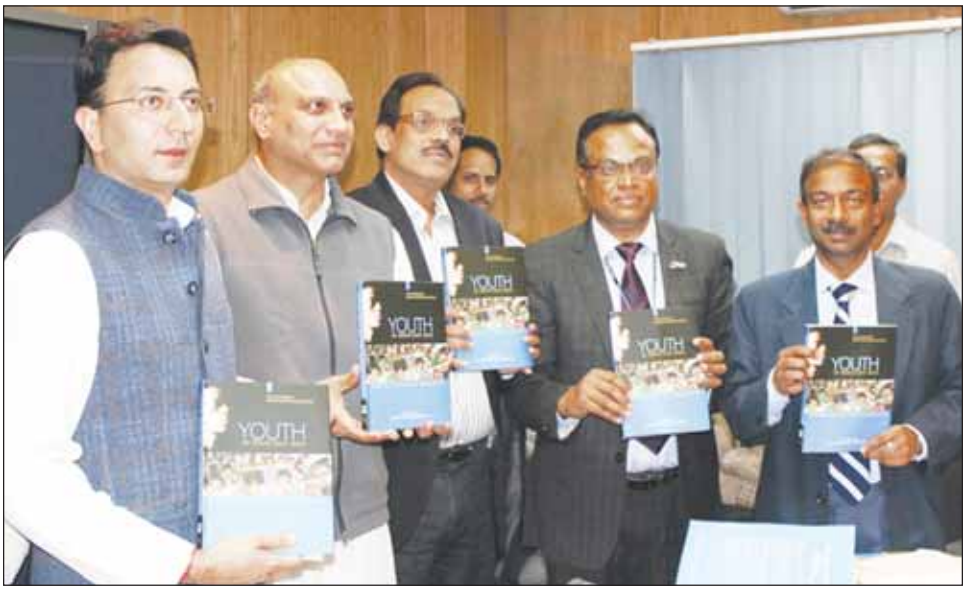

भारत सरकार के माननीय केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री एम.एम. पल्लम राजू ने दिल्ली स्थित शास्त्री भवन में अपने कार्यालय में 20 नवंबर, 2012 को *यूथ ऑफ नॉर्थ-इंडिया : डेमोग्रैफिक्स एंड रीडरशिप* शीर्षक एक पुस्तक का लोकार्पण किया। इस अवसर पर मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री जितिन प्रसाद, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सचिव श्री अशोक ठाकुर (उच्चतर शिक्षा) और मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी), एनसीएईआर तथा एनबीटी के वरिष्ठ पदाधिकारीगण उपस्थित थे। प्रस्तुत रिपोर्ट नेशनल एक्शन प्लान फॉर रीडरशिप डिवेलपमेंट एमंग दि यूथ (राष्ट्रीय युवा वर्ग पाठकीयता विकास कार्ययोजना परिषद) (एनएपीआरडीवाई) के तहत एनबीटी द्वारा प्रस्तुत और नेशनल काउंसिल ऑफ अप्लाइड इकॉनॉमिक रिसर्च (एनसीएईआर) को अभ्यर्पित राष्ट्रीय युवा पाठकवर्ग सर्वेक्षण (नेशनल यूथ रीडरशिप सर्वे) (2009-10) का अनुवर्ती अध्ययन है। इसमें पूर्वोत्तर राज्यों के साक्षर युवाओं की पठन आदतों तथा मीडिया के विभिन्न स्वरूपों से उनके परिचय और उनकी पठन आदत पर विविध सामाजिक-आर्थिक एवं प्रेरणादायी कारकों के पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषणात्मक और विस्तृत लेखा-जोखा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। साक्षर युवाओं में 'अवकाश के क्षणों में या पाठ्येतर पुस्तकें' पढ़ने की आदत प्रस्तुत अध्ययन का विशेष अभिप्रेत है। इस क्षेत्र में देश के शेष भागों की तुलना में पूर्वोत्तर राज्यों की बेहतर समझ के लिए, परिणामों की तुलना प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के आधार पर चयनित एक समृद्ध राज्य (महाराष्ट्र) और आर्थिक रूप से गरीब राज्य (बिहार) के समान परिणाम से की गई है। इसके अतिरिक्त यह पूर्वोत्तर राज्यों के संदर्भ में परिणामों की समग्र भारतीय परिदृश्य के साथ तुलना है।

पुस्तक मेला,
पुस्तक पर्व
मेरा गौरव,
मेरा गर्व

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह का श्री कपिल सिब्बल द्वारा उद्घाटन

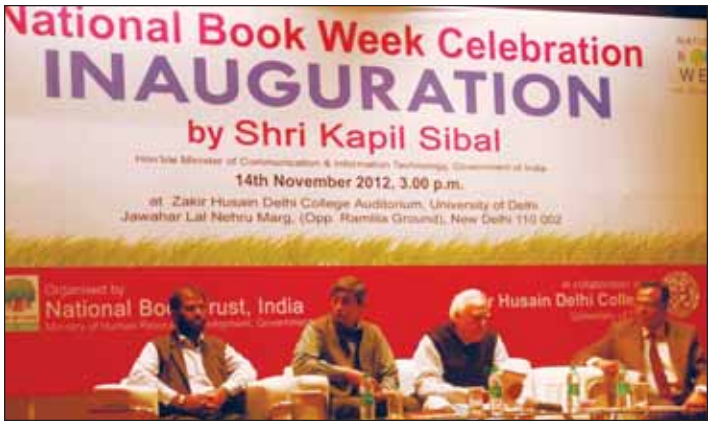

बाल दिवस पर जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह का उद्घाटन करते हुए माननीय संचार एवं सूचना तकनीकी मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने कहा, "मेरा मानना है कि पुस्तकों के माध्यम से हम बच्चों को और पुस्तकों के माध्यम से ही बच्चे हमें शक्ति प्रदान करते हैं। हम जब कभी खजाने के बारे में सोचते हैं तो हमारे मन में धन की बात उभर आती है। किंतु वास्तविक खजाना तो पुस्तकें हैं जिनसे हमें अगाध ज्ञान मिलता है।"

जिस गति से तकनीकी में परिवर्तन हो रहे हैं, उसकी चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि ये परिवर्तन बच्चों की एक बटन को क्लिक कर केवल भारी संख्या में पुस्तकों तक पहुँचने में सहायता कर सकते हैं। उन्होंने कहा, "आकाश के विकास के बाद, हमारा सपना है कि इसकी सहायता से बच्चों का किताबों से परिचय भी हो।" उन्होंने कहा कि बच्चों के लिए पुस्तकें केवल मुद्रित रूप में ही नहीं बल्कि डिजिटल रूप में भी उपलब्ध होनी चाहिए।

उनका यह भी मानना था कि सभी भारतीय भाषाओं की, और खासकर उर्दू जैसी भाषाओं की, जिनका महत्व क्षीण हो रहा है, पुस्तकों के माध्यम से देश की संस्कृति और परंपरा को बनाए रखने की जरूरत है।

उद्घाटन समारोह के दौरान, श्री कपिल सिब्बल ने एनबीटी द्वारा प्रकाशित हिंदी, अँग्रेजी और उर्दू की पुस्तकों का लोकार्पण भी किया। उन्होंने चुनिंदा स्कूलों के पुस्तकालयों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं को एनबीटी की पुस्तकें और 'सिट एंड ड्रॉ' प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रतिभा प्रमाण पत्र भी वितरित किए।

इस अवसर पर राष्ट्रीय उर्दू भाषा प्रोन्नयन परिषद (नेशनल काउंसिल फॉर प्रमोशन ऑफ उर्दू लैंग्वेज–एनसीपीयूएल) के निदेशक डॉ. ख्वाजा एकरामुद्दीन और जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एम. असलम परवेज ने भी अपने-अपने विचार रखे।

इसके पूर्व, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह कार्यक्रम के माध्यम से एनबीटी का प्रयास लोगों और खासकर बच्चों तथा युवाओं तक पहुँचना है। उन्होंने सप्ताह के दौरान देश भर में एनबीटी द्वारा आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी भी दी।

कॉलेज परिसर में साहित्य अकादेमी और राष्ट्रीय उर्दू भाषा प्रोन्नयन परिषद के सहयोग से एनबीटी द्वारा एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। एनबीटी ने कार्यक्रम स्थल पर एक फोटो गैलरी भी लगाई, जिसमें एनबीटी की 1957 में स्थापना से उसकी अब तक की यात्रा की झाँकी प्रस्तुत की गई थी।

विदित हो कि नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया हर वर्ष 14 से 20 नवंबर तक देश भर में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह का आयोजन करता है। पुस्तकों, पुस्तक प्रोन्नयन और विशेष रूप से बच्चों तथा युवाओं में पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के प्रति समर्पित इस विशेष सप्ताह के दौरान विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों और पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है।

इस वर्ष दिल्ली और आंध्र प्रदेश, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह, असम, बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओड़िशा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में लगभग 200 पुस्तक प्रोन्नयन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

(इन कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण अगले अंक में। **–संपा.**)

'किताबें'–नई दिल्ली में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह समारोह का आयोजन

गत 16 से 18 नवंबर, 2012 तक नई दिल्ली के साकेत स्थित डीएलएफ मॉल के प्रांगण में सिनेदरबार के सहयोग से नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने एक तीन दिवसीय राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह–'किताबें'–का आयोजन किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन एनबीटी के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने किया। उन्होंने कहा कि पढ़ने की आदत (पाठकीयता) को बढ़ावा देने हेतु एनबीटी देश के पिछड़े और ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों के लिए कार्य करता है। उन्होंने यह भी कहा कि शहरों में रहने वाले बच्चों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए और इसीलिए समाज के सभी तबकों के बच्चों को शामिल करने हेतु एनबीटी ने कुछ नए कदम उठाए हैं। उन्होंने बच्चों से उनकी लेखन क्षमता में निखार लाने हेतु पुस्तक से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने की अपील की।

श्री सिकंदर ने विशेष रूप से 13 से 17 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों द्वारा लिखित कहानियों के संग्रह *वेव्स* का लोकार्पण भी किया। पुस्तक स्कूली बच्चों के लिए सृजनात्मक लेखन पर सिनेदरबार और एनबीटी द्वारा आयोजित विशेष कार्यशाला का प्रतिफल है। इस अवसर पर उपस्थित स्कूली बच्चों के बीच पुस्तक का वितरण भी किया गया।

मॉल के गतिविधि कोने में कई खास विशेषताएं थीं, जैसे टाइपराइटर, जिस पर आगंतुकों ने कागज पर शब्द टाइप किए और मशीन के इस्तेमाल से जुड़ी अपनी पुरानी यादें ताजा कीं। लोगों के बैठने और पुस्तकें पढ़ने के लिए एक छोटा पुस्तकालय भी उपलब्ध कराया गया।

'किताबें' का पहला दिन चहल-पहल भरा रहा। *काव्य प्रस्तुति* शीर्षक सत्र में छात्रों से कहानियाँ और कविताएँ लिखकर उन्हें अपने नाम के साथ एक पौधे पर लटकाने को कहा गया। सत्र प्रख्यात कलाकार योको ओनो की एक परियोजना से प्रेरित था। आगंतुकों को बच्चों की कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता से परिचित कराने हेतु पौधे को गतिविधि कोने में स्थापित किया गया।

कथावाचन सत्र का संचालन 'कथाशाला' की सुश्री सिमी श्रीवास्तव ने किया। महात्मा गाँधी और अन्य लोक कथाएँ सुनाकर उन्होंने बच्चों की कल्पनाशक्ति को चमत्कृत कर दिया।

सेंट मार्क्स स्कूल, सीसीए स्कूल, स्कॉटिश हाई स्कूल, रामजस स्कूल, ब्लूम पब्लिक स्कूल, लोरेटो कन्वेंट स्कूल, आर्मी पब्लिक स्कूल और मिलेनियम स्कूल समेत दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

मॉल में 17 और 18 नवंबर को भी ट्रेजर हंट, वीव अ यार्न आदि जैसे कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

पत्रकार एवं सामाजिक सक्रियतावादी रामी छाबड़ा के संस्मरण का लोकार्पण

नई दिल्ली स्थित इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 20 नवंबर, 2012 को आयोजित एक कार्यक्रम में प्रख्यात पत्रकार एवं सामाजिक सक्रियतावादी सुश्री रामी छाबड़ा की नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा प्रकाशित *ब्रेकिंग ग्राउंड : जर्नी इनटू दि मीडिया...एंड आउट* शीर्षक आत्मकथा का लोकार्पण किया गया।

लोकार्पण के बाद एक पैनल परिचर्चा का आयोजन किया गया। सत्र का संचालन *दि स्टेट्समैन* और *दि इंडियन एक्सप्रेस* के पूर्व संपादक श्री एस. निहाल सिंह ने किया।

परिचर्चा में पीपल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज (पीयूसीएल) के पूर्व अध्यक्ष न्यायाधीश (सेवानिवृत्त) श्री राजिंदर सच्चर, सांसद (राज्य सभा) एवं दि ट्रिब्यून के पूर्व मुख्य संपादक श्री एच के दुआ, लोक स्वास्थ्य आंदोलन (पीपल्स हेल्थ मूवमेंट) की संस्थापक सदस्य डॉ. मीरा शिवा तथा इंडियन एसोसिएशन ऑफ वीमेंस स्टडीज की पूर्व अध्यक्ष डॉ. ज़रीना भट्टी ने भाग लिया।

वक्ताओं ने सुश्री छाबड़ा के व्यक्तित्व और पुरुष सत्तात्मक समाज में अपना स्थान बना लेने के उनके कृतसंकल्प और जुझारू स्वभाव पर बड़ी सूक्ष्मता से प्रकाश डाला। श्री सच्चर ने संसद में महिलाओं की बढ़ती शक्ति और सेक्स वर्कर्स से जुड़े मुद्दों के प्रति उनके नजरिए की चर्चा की। सभी वक्ताओं ने स्वास्थ्य नीतियों, लिंग पूर्वाग्रह जैसे मुद्दों पर किए गए उनके प्रयासों और खासकर 1960 व 70 के दशकों के दौरान, जब समाज में स्त्रियों के प्रति लोगों की सोच में कोई परिवर्तन नहीं आया था, जिन परिस्थितियों में उन्होंने एक पत्रकार और सक्रियतावादी कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया उन परिस्थितियों पर भी चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा कि यह पुस्तक अपने सार रूप में एक आत्मकथा से ज्यादा है, यह एक प्रकार की सामाजिक आत्मकथा है क्योंकि इसमें न केवल उनके जीवन का बल्कि स्वातंत्र्योत्तर समाज का चित्रण है।

सुश्री छाबड़ा ने वर्ष 1975 में मेक्सिको से वियतनाम तक की अपनी यात्रा और एक पत्रकार के रूप में अपने अनुभव से संबद्ध अपनी पुस्तक के कुछ अंश पढ़े।

इसके पूर्व एनबीटी के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि पाठकगण पुस्तक को हाथों-हाथ लेंगे। उन्होंने पाठकों के लिए ई-पुस्तकों के प्रकाशन की एनबीटी की योजना की जानकारी भी दी।

स्वातंत्र्योत्तरकालीन भारत में देश में, खासकर शिक्षित वर्गों में, आशाओं और वांछाओं का एक अभूतपूर्व वातावरण पनपा। उस समय के वातावरण में पली-बढ़ीं और पचास तथा साठ के दशकों में अपनी आजीविका शुरू करने वाली रामी छाबड़ा ने एक अग्रणी 'महिला' पत्रकार के रूप में अपने लिए एक जगह बनाई। 'व्यावसायिक जीवनवृत्त' के रूप में प्रस्तुत पुस्तक खासकर वैश्वीकरण के बीते दो दशकों के दौरान असंतोषों, संशयों और निरंतर चल रहे युद्धों के बीच बदलते जीवन के सकारात्मक परिदृश्य में ले जाती है। आकर्षक और भावनापूर्ण ढंग से लिखित, नारी समानता और लोक सेवा संचार के खाली स्थान पर घटनाक्रमों के सूक्ष्म विवरणों के साथ प्रकाश डालती पुस्तक राष्ट्र-निर्माण के 'अन्य' पक्षों पर एक बहुमूल्य सूक्ष्म दृष्टि प्रस्तुत करती है।

'पॉल सर्वेज इन मीडिया : ऐन इंडियन पर्सपेक्टिव' पुस्तक का लोकार्पण

22 नवंबर, 2012 को नई दिल्ली स्थित कंस्टिट्यूशन क्लब में आयोजित एक कार्यक्रम में माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री डॉ. शशि थरूर ने एनबीटी द्वारा सद्यःप्रकाशित अग्रणी विद्वान डॉ. भास्कर राव की *पॉल सर्वेज इन मीडिया : ऐन इंडियन पर्सपेक्टिव* शीर्षक पुस्तक का लोकार्पण किया।

डॉ. थरूर ने कहा कि भारत के नागरिक मतदान-सर्वेक्षण को नहीं समझते और प्रस्तुत पुस्तक देश के संचार माध्यमों द्वारा ऐसे सर्वेक्षणों के संचालन में अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं की संपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराएगी। पुस्तक में मतदान के प्रति पूर्वाग्रह, संचार माध्यमों की भूमिका और सर्वेक्षण से जुड़े मुद्दों का उल्लेख है। उन्होंने आगे कहा, ''एनबीटी के वाजिब मूल्यों पर पुस्तकें मुहैया कराते हुए आम आदमी तक पहुँचने के प्रयास की एक लेखक के रूप में मैं सराहना करता हूँ।''

इस अवसर पर भारत के पूर्व चुनाव आयुक्त डॉ. जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति, भारत के वर्तमान चुनाव आयुक्त श्री एच.एस. ब्रह्मा, आउटलुक के संपादक श्री कृष्ण प्रसाद, इंडिया टुडे के पूर्व संपादक डॉ. एस. वेंकट नारायण, वरिष्ठ पत्रकार सुश्री सीमा मुस्तफा ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर पुस्तक के लेखक डॉ. एन. भास्कर राव भी उपस्थित थे। भारत में वर्ष 1970 के आरंभिक दिनों से नमूना सर्वेक्षणों के संचालन में उनकी अपनी एक विशिष्ट और महती पृष्ठभूमि रही है। डॉ. राव राष्ट्रीय सूचना अधिकार आंदोलन एवं निर्वाचन-प्रक्रिया तथा न्यायपालिका के सुधार

कार्यों में सक्रियता से शामिल हैं, भ्रष्टाचार पर उनके वार्षिक शोध वर्ष 2000 से प्रमुख स्रोत हैं। डॉ. राव पारदर्शिता, आरटीआई, भ्रष्टाचार अवलोकन, सुशासन और आईसीटी को समर्पित जर्नल *ट्रांसपरेंसी रिव्यू* का संपादन भी करते हैं।

कार्यक्रम के आरंभ में ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया।

पुस्तक चुनाव से संबंधित सर्वेक्षणों के संचालन के जटिल मुद्दों के प्रति एक सूक्ष्म दृष्टि प्रस्तुत करती है। इसमें चुनाव सर्वेक्षण के संचालन में मीडिया की भूमिका और उसके द्वारा अपनाई जाने वाली विधियों का विश्लेषण भी किया गया है। चुनाव सर्वेक्षण के संचालन और उपयोग में पारदर्शिता पर जोर देते हुए पुस्तक समीक्षात्मक विवेचन के साथ अंदरूनी चित्र और बाहरी सरोकार प्रस्तुत करती है।

त्रिची पुस्तक मेला

तिरुचिरापल्ली के जिला प्रशासन एवं रोटरी क्लब के सहयोग से एनबीटी द्वारा तमिलनाडु के त्रिची में 6 से 14 अक्टूबर, 2012 तक एक पुस्तक मेले का आयोजन किया गया।

इस नौ दिवसीय मेले का आयोजन करते हुए समाहर्ता सुश्री जयश्री मुरलीधरन ने नगर में बृहत स्तर पर पुस्तक मेले के आयोजन की एनबीटी की पहल की सराहना की। दर्शकों में उपस्थित युवाओं एवं बच्चों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, ''पुस्तकें पढ़ना ज्ञान अर्जन का सबसे अच्छा तरीका है। यदि आप पढ़ना शुरू करें तो आप कभी रुकेंगे नहीं।''

इस अवसर पर बोलते हुए एनबीटी, इंडिया के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने कहा, ''यह पुस्तक मेला लोगों, खासकर बच्चों व युवाओं को पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने और पढ़ने की आदत का विकास करने का एक अवसर है।'' उन्होंने आगे देश भर में पुस्तक प्रोन्नयन केंद्रों की स्थापना की एनबीटी की योजना की घोषणा करते हुए कहा, ''ये केंद्र साहित्यिक कार्यक्रमों और पुस्तक लोकार्पणों का आयोजन करने का अवसर प्रदान करेंगे। उनमें एनबीटी की पुस्तकों का विक्रय केंद्र और राज्यों के पिछड़े इलाकों में पुस्तकें उपलब्ध कराने हेतु एक सचल वाहन भी होगा।''

इस अवसर पर तंजावुर स्थित त्रिची विश्वविद्यालय के कुलपति श्री एम.तिरुमलाई, जानेमाने लेखक श्री सु. वेंकटेशन, दक्षिण भारत पुस्तक विक्रेता एवं प्रकाशक संघ (दि बुकसेलर्स एंड पब्लिशर्स एसोसिएशन ऑफ साउथ इंडिया) के अध्यक्ष श्री आर.एस. षण्मुगम और त्रिची रोटरी क्लब के अध्यक्ष मोहम्मद हुसैन ने भी अपने-अपने विचार रखे। त्रिची में पहली बार मेला आयोजन की एनबीटी की पहल की उन्होंने प्रशंसा की और आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी इसका आयोजन नियमित रूप से किया जाता रहेगा।

सेंट जॉन'स वेस्ट्री एंग्लो इंडियन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आयोजित पुस्तक मेले में देश भर के लगभग 140 प्रकाशकों, वितरकों और पुस्तक विक्रेताओं के 175 स्टॉल लगाए गए। मेले में सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए विभिन्न विषयों की हिंदी और अंग्रेजी समेत सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में पुस्तकें उपलब्ध थीं।

प्रकाशक सम्मेलन

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 के आयोजन के कुछ पहलुओं पर चर्चा करने हेतु, 3 नवंबर, 2102 को नई दिल्ली स्थित इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में एनबीटी, इंडिया ने एक प्रकाशक सम्मेलन का आयोजन किया। नई दिल्ली के प्रगति मैदान में 4 से 10 फरवरी 2013 तक 21वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का आयोजन होना है। सम्मेलन में लगभग 50 प्रकाशकों और प्रकाशन संघों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

अपने उद्‌बोधन में एनबीटी के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने मेले में आयोजित होने वाले कुछ नए कार्यक्रमों पर चर्चा की। मेले के आधार वाक्य (थीम) कार्यक्रम में भारत के जनजातीय एवं लोक साहित्य को केंद्र में रखा गया है : 'देशज अभिव्यक्तियाँ : भारतीय परिकल्पना में लोक एवं जनजातीय साहित्य'। फ्रांस मेले में सम्मानित अतिथि देश होगा जो भारी संख्या में प्रकाशकों के साथ भाग लेगा और दोनों देशों के बीच पुस्तक कारोबार से संबद्ध विभिन्न परिचर्चाओं का आयोजन करेगा। वहीं, नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के आयोजन से पहले 2-3 फरवरी, 2013 को एनबीटी पहली बार एक दो-दिवसीय नई दिल्ली राइट्स टेबल का आयोजन करेगा। राइट्स टेबल कार्यक्रम में व्यवसायी से व्यवसायी (बी2बी) वार्तालाप के लिए भारत और अन्य देशों के प्रकाशन व्यवसायी एवं राइट्स प्रतिनिधि एक साथ एकत्र होंगे। इसकी विस्तृत जानकारी एनबीटी के नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले की वेबसाइट पर उपलब्ध है। निदेशक ने यह जानकारी भी दी कि मेले में भाग लेने वाले इस वर्ष से अपने स्टॉलों की ऑनलाइन बुकिंग करा सकते हैं।

पाठक मंच बुलेटिन
बच्चों की द्विभाषी पत्रिका
वार्षिक शुल्क : ₹ 50.00

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया
फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

अलीगढ़ पुस्तक मेला

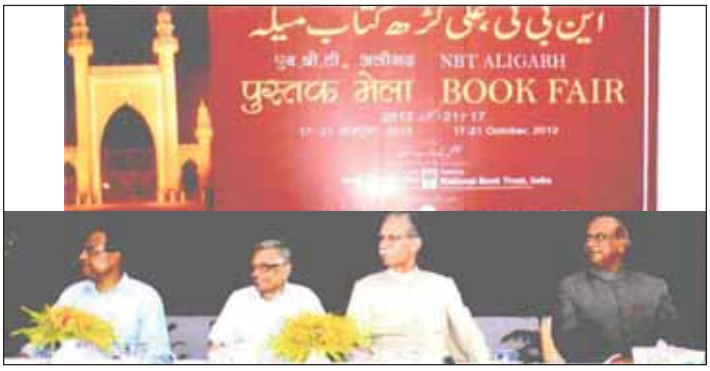

''यह बहुत खुशी की बात है कि नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने अलीगढ़ में पुस्तक मेला का आयोजन किया है। इससे पुस्तकप्रेमियों को अच्छी पुस्तकों तक पहुँचने में आसानी होगी। साथ ही ऐसा आयोजन प्रत्येक वर्ष होना चाहिए। हालाँकि इंटरनेट पर बहुत सामग्री उपलब्ध है, लेकिन इससे पुस्तकों का महत्व किसी तरह भी कम नहीं होता।'' यह उद्‌गार विख्यात इतिहासकार प्रो. इरफान हबीब ने अलीगढ़ में आयोजित अलीगढ़ पुस्तक मेले के दौरान व्यक्त किए। यह पुस्तक मेला 17 से 21 अक्तूबर, 2012 तक जाकिर हुसैन इंजीनियरिंग कॉलेज के परिसर में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया गया। इस पुस्तक मेले के आयोजन में अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी का सहयोग भी शामिल रहा। इस पुस्तक मेले का उद्‌घाटन ए.एम.यू. के कुलपति, भूतपूर्व लेफ्टिनेंट कर्नल जमीरूद्‌दीन शाह ने किया। उद्‌घाटन समारोह के दौरान जमीरूद्‌दीन शाह ने कहा कि ''मानवता के लिए रीडिंग हैबिट (पठन आदत) बेहद जरूरी है। इससे समाज के हरेक वर्ग को जोड़ने में मदद मिलती है।'' उन्होंने यह भी कहा कि ''बचपन में कॉमिक्स बुक्स पढ़ने की आदत ने रीडिंग हैबिट में मदद की।'' इस मौके पर उन्होंने ए.एम.यू. में मेला आयोजित करने के लिए ट्रस्ट को धन्यवाद दिया और विश्वास दिलाया कि यहाँ के पुस्तकप्रेमी विद्यार्थी और शिक्षकों के लिए यह एक सुनहरा अवसर है जो अपनी पसंद की किताबें खरीद सकते हैं। इस पुस्तक मेले में देश के तकरीबन 90 से अधिक प्रकाशकों ने भाग लिया। अपने स्वागत भाषण में ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंर ने आगंतुकों को ट्रस्ट की गतिविधियों से अवगत कराया और कहा कि हमारे लिए गौरव की बात है कि यह मेला ए.एम.यू. में आयोजित किया गया। इस दौरान अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन ट्रस्ट में उर्दू संपादक, डॉ. शम्स इकबाल ने किया।

फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला

भारत ने फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेले में बृहत स्तर पर भाग लिया। मेले में 'कैपेक्सिल' के सहयोग से एनबीटी द्वारा 16 स्टॉलों के एक विशाल भारत मंच का निर्माण किया गया। एनबीटी, इंडिया के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर के अनुसार "आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय पुस्तकों की बड़ी मांग है। अपनी पुस्तकों के विदेशी भाषाओं में प्रोन्नयन हेतु हमने भारतीय पुस्तकों के प्रकाशन के प्रति दिलचस्पी रखने वाले विदेशी प्रकाशकों के लिए वित्तीय सहायता योजना शुरू की है।" उन्होंने यह उद्घोषणा फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेले में 'इंडियन लिट्लेचर एब्रोड', संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से एफआईपी द्वारा आयोजित पैनेल परिचर्चा में की।

उन्होंने कहा, "फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेले में भागीदारी से एनबीटी को खासकर नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में अन्य विदेशी प्रकाशकों की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए उनके साथ नेटवर्क निर्माण में सहायता मिली है।" इसके बाद, उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मेला निदेशकों के सम्मेलन में भाग लिया जहाँ उन्होंने नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में भागीदारी के महत्व के साथ-साथ इस बात पर चर्चा की कि एशिया और अफ्रीका के रोमांचक पुस्तक बाजार तक इसकी पहुँच कैसे हो।

फ्रैंकफर्ट में भारत के महा वाणिज्यदूत श्री तरनजीत सिंह संधू भारत मंच पर पधारे और भारत की प्रबल भागीदारी पर खुशी जाहिर की।

फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेले का आयोजन 10 से 14 अक्टूबर, 2012 तक किया गया। एक तीव्र विकास के क्षेत्र के रूप में बच्चों, युवाओं और शिक्षा के क्षेत्र पर विशेष रूप से केंद्रित मेले का लक्ष्य यह दर्शाना था कि पुस्तक उद्योग ने स्वयं एक ऐसी पीढ़ी को जन्म दिया है, जिस पर उसे गर्व होना चाहिए।

स्थापित मंच चिल्ड्रेंस एंड यंग एडल्ट मीडिया के अतिरिक्त, यह नवीन क्षेत्र 'हॉट स्पॉट किड्स एंड ई-रीडिंग' का स्थल भी था, जहाँ मुख्य विषय डिजिटल एवं सामाजिक पठन और लेखन था। हॉट स्पॉट के प्रदर्शनकर्ताओं में साहित्यिक पोर्टल, सामाजिक पठन सामग्री प्रोवाइडर और स्व-प्रकाशन मंच शामिल थे।

चिल्ड्रेंस एंड यंग एडल्ट मीडिया से घनिष्ठ संबंध शिक्षा का विषय है, जिसका वर्ष 2006 से फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेले में अपना अलग समर्पित क्षेत्र रहा है–शिक्षा, विज्ञान एवं विशेषज्ञ सूचना का घर। मेले में हर रोज फोरम एडुकेशन हॉल में शिक्षा विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और विकासकर्ताओं के साथ परिचर्चाओं और प्रस्तुतियों का आयोजन भी किया गया। यूरोपियन ऑर्गेनाइजेशन फॉर न्युक्लियर रिसर्च (यूरोपीय नाभिकीय/परमाणु शोध संस्थान)–सीईआरएन–के स्टॉल पर विज्ञान में अभिरुचि रखने वाले आगंतुकों की भीड़ देखी गई, जहाँ वे लाइव सर्किट के माध्यम से कभी भी सीईआरएन के नियंत्रण कक्ष का अंदरूनी दृश्य देख सकते थे। स्टैंड पर शोधकर्ताओं ने सीईआरएन के प्रसिद्ध पार्टिकुल एक्सिलेरेटर या नई खोज हिग्स पार्टिकुल से जुड़े प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

सम्मानित अतिथि देश न्यूजीलैंड की प्रस्तुति पुस्तक मेले का मुख्य आकर्षण थी, जिसकी आकर्षक चमक-दमक, भव्य मंडप और रंगारंग प्रदर्शन, नृत्य, गायन, मल्टी मीडिया और साहित्य की व्यवसायी आगंतुकों और सामान्य जनों ने एकमत से भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके अतिरिक्त, न्यूजीलैंड की 68 नई अनूदित पुस्तकों का प्रदर्शन भी किया गया जिनमें हलके कथा-साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य, ग्राफिक उपन्यास, चित्रकथाएँ और कथा-साहित्य से इतर पुस्तकें शामिल थीं। इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु एक व्याख्यानमाला और चर्चाओं का आयोजन भी किया गया।

फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला 2012 में 2,81,753 से ज्यादा आगंतुक आए, जहाँ फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला लगभग 3,300 व्यवसायी भागीदारों के लिए एक अंतरराष्ट्रीय ज्ञान तंत्र के अंग के रूप में पुस्तक उद्योग के महत्वपूर्ण हस्तियों से मिलने का एक माध्यम सिद्ध हुआ। इन भागीदारों का व्यवसाय के नए प्रारूपों और रुझानों से परिचय हुआ और इन्होंने सर्वोत्तम कार्यप्रणाली के अंतरराष्ट्रीय नमूने देखे तथा अपने-अपने विचारों का आदान-प्रदान किया।

मेले में उप निदेशक (प्रदर्शनी) श्री प्रदीप छाबड़ा और उप निदेशक (कला) श्री देबू सरकार ने ट्रस्ट का प्रतिनिधित्व किया।

कन्नड़ सलाहकार समिति की बैठक

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के दक्षिणी क्षेत्र कार्यालय, बंगलुरू में 5 नवंबर, 2012 को कन्नड़ सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने की। बैठक में डॉ. कमला हम्पना, डॉ. एल. हनुमतैया, डॉ. सिद्दालिंगा पट्टणाशेट्टी, डॉ. बी. सुरेंद्रराव, श्री नागेश हेगड़े, प्रो. एस.जी. सिद्दारमैया, श्री रमजान दरगा, श्री विवेक शानभाग पैनल-सदस्य के रूप में तथा श्री प्रकाश कम्बतल्ली विशेष आमंत्रित के रूप में उपस्थित थे। ट्रस्ट की ओर से संपादक (कन्नड़ भाषा) श्री एच. नागराजप्पा तथा द.क्षे.का., बंगलुरू के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री अमित कार्की बैठक में उपस्थित थे।

मलयालम सलाहकार समिति की बैठक

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की मलयालम सलाहकार समिति की बैठक का 7 नवंबर, 2012 को अलुवा, एर्नाकुलम, केरल में आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने की। बैठक में डॉ. रविकुमार के.एस., प्रो. एन.पी. हफीज मुहम्मद, डॉ. पी.वी. कृष्णन नायर, सुश्री के.आर. मीरा, श्री रवि डी.सी., श्री एम.के. हरिकुमार, श्री टी.एन. प्रकाश, श्री अकबर कक्काट्टिल, डॉ. पी.के. तिलक, सुश्री ग्रेसी, श्री यू.के. कुमारन और श्री नारायण पैनल-सदस्य के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर एवं ट्रस्ट में मलयालम भाषा संपादक श्री रूबिन डिक्रूज भी उपस्थित थे।

पुस्तक समीक्षा

चुनी हुई कविताएँ : विनोद कुमार शुक्ल (कवि ने कहा शृंखला)
पृ. 128 ₹ 190
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
'कविता मेरे लिए दुनियादारी है, और लिखना भी।' इस वक्तव्य के साथ समाप्त कवि का आत्म कथ्य हालाँकि अधूरेपन का अहसास कराता है पर कविता भी तो कभी पूरी नहीं हो पाती, अधूरी ही रहती है। कवि को अपने रचे के चयन के साथ पढ़ना दिलचस्प और एक अभिनव अनुभव होगा।

भूतों का मैकडोनल (दो लघु उपन्यास)
नासिरा शर्मा; पृ. 120 ₹ 200
साहित्य भंडार, 50, चाहचंद, इलाहाबाद-3
प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका के दो उपन्यास शामिल हैं। पहला, भूतों का मैकडोनल तथा दूसरा, दिल्लू दीमक। दोनों ही उपन्यासों में शरारती बच्चों की मासूम शरारतों के विवरण के बाद उनके सुधर जाने की कहानी है।

बसेरा (उपन्यास);*हरिसुमन बिष्ट;* पृ. 176 ₹ 250
कल्याणी शिक्षा परिषद, 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-02
राजधानी दिल्ली से सटा निठारी इलाका किसी परिचय का मोहताज नहीं है। निठारी कांड के सच की परतें उधेड़ता यह उपन्यास अपने समय की एक क्रूरतम एवं घिनौने सच को इस तरह से पाठकों के सामने लाता है कि किसी का भी दिल दहल जाए।

यह दिल्ली है (संस्मरण)
राज बुद्धिराजा; पृ. 64 ₹ 125
आर्य प्रकाशन मंडल, IX/221, सरस्वती भंडार, गांधीनगर, दिल्ली-31
विगत कई दशकों से दिल्ली में रहने वाली लेखिका के दिल्ली के कई सुखद-दुखद और त्रासद अनुभव रहे हैं। दिल्ली के इन्हीं कटु-मधु अनुभवों को लेखिका ने दिल्ली पर आधारित अपनी इस चौथी पुस्तक में उकेरा है।

दीपक मेघ हिण्डोल (काव्य संग्रह)
डॉ. अमरेन्द्र; पृ. 144 ₹ 150
समीक्षा प्रकाशन, जे. के. मार्केट, छोटी कल्याणी, मुजफ्फरपुर-842001, बिहार
अस्सी गीत, उनचालीस सॉनेट और तीन विविध कविताओं का संग्रह है यह पुस्तक। ये गीत और सॉनेट सन् '09 से '11 की अवधि के हैं और प्रसारित/प्रकाशित हैं। पढ़ेंगे तो अच्छा लगेगा।

ईप्सितायन (यात्रा वृत्तांत)
भारती राणे; अनु. : जेठमल ह. मारू; पृ. 200 ₹ 250
सर्जना, शिवबाड़ी रोड, बीकानेर-334003, राजस्थान
यूरोप और अफ्रीका के सात देशों की यात्रा का वृत्तांत है यह पुस्तक, जो मूल गुजराती में लिखी गई है। पाठक को पढ़ते समय यह लगता है कि उन देशों की वह भी यात्रा कर रहा है।

मिटता भारत, बनता इंडिया (लेख)
शशि शेखर; पृ. 448 ₹ 600
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-02
21वीं सदी का पहला दशक बेहद उथल-पुथल भरा रहा है। प्रस्तुत पुस्तक में पत्रकार-लेखक के इसी कालावधि में लिखे गए साप्ताहिक स्तंभ लेखों का संकलन है। इन लेखों को पढ़कर पता चलता है कि भूमंडलीकरण कैसे 'भारत' को तो खा रहा है, पर 'इंडिया' को बना रहा है।

दूसरा पंचपरमेश्वर (गद्यकृति)
राधेश्याम तिवारी; पृ. 192 ₹ 300
इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, के-71, कृष्णा नगर, दिल्ली-51
यह पुस्तक लेखक की गद्य की एकाधिक विधाओं का संचयन है। इसमें विचार-यात्रा, व्यक्तित्व एवं कुछ और नोट्स–तीन शीर्षकों में अनेक गद्य रचनाएँ संग्रहीत हैं। इन्हें पढ़ना लेखक के समय और मन को भी पढ़ना है।

यादों का कारवाँ (संस्मरण)
प्रकाश मनु; पृ. 272 ₹ 400
शांति पुस्तक मंदिर, 71, ब्लॉक-के, लाल क्वार्टर, कृष्णा नगर, दिल्ली-51
वरिष्ठ साहित्यकार के अपने समकालीन साहित्यिक व्यक्तित्वों के साथ बिताए अंतरंग पलों का संस्मरणात्मक विवरण है इस पुस्तक में, जिसे पढ़कर विगत तीन दशकों के साहित्य और साहित्यिक हलचलों का इतिहास देखा-जाना जा सकता है। इस कारवाँ के कुछ महत्वपूर्ण पड़ाव हैं–रामविलास शर्मा, देवेंद्र सत्यार्थी, त्रिलोचन, रघुवीर सहाय, शैलेश मटियानी आदि।

विवशता (उपन्यास)
नरेन्द्र लाहड़; पृ. 160 ₹ 300
सूर्यप्रभा प्रकाशन, 2/9, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
वैश्वीकरण के इस युग में ध्वस्त होते पारंपरिक मूल्यों ने हर संवेदनशील व्यक्ति को झकझोरा है। विवशता इस उपन्यास की नायिका है जिसके दृढ़ चरित्र और संघर्ष क्षमता की कहानी कहकर लेखक स्त्री अस्मिता को एक उत्स प्रदान करते हैं।

कबीर तथा अन्य नाटक
सत्या नन्द सेवक; अनुवाद : अमृता सेवक; पृ. 192 ₹ 250
नेशनल बुक शॉप, प्लेजर गार्डन मार्केट, चांदनी चौक, दिल्ली-06
पुस्तक में 'कबीर' के अलावा दो और नाटक हैं। ये हैं–'जन्म दिन' तथा 'रिश्ते'। पंजाबी में लिखे नाटकों का यह हिंदी अनुवाद है। अलग-अलग विषय पर लिखे ये नाटक मंचन योग्य हैं और हिंदी समाज को भी रुचेंगे।

बुद्ध फिर मुस्कराया है (कविता संग्रह); *हरभजन सिंह 'रेणु'*
भाषांतर एवं संपादन : पूरन मुद्गल, मोहन सपरा
पृ. 80 ₹ 195
आस्था प्रकाशन, लाडोवाली रोड, जालंधर, पंजाब
सामाजिक सरोकारों से सिक्त प्रस्तुत कविता संग्रह सहज-सरल भाषा में लिखा जाकर भी मारक और तीक्ष्ण है। इन कविताओं में भारतीय मिथक का प्रभावी प्रयोग है।

समन्वय : आईएचसी भारतीय भाषा महोत्सव

भारतीय भाषाओं की धरोहर को मजबूत करने के उद्देश्य एवं 'बोली बानी भाषा, गाँव कस्बा शहर' के थीम के साथ 'समन्वय : आईएचसी भारतीय भाषा महोत्सव' के दूसरे संस्करण का नई दिल्ली में 2 नवंबर, 2012 से तीन दिवसीय आयोजन संपन्न हुआ। लोधी रोड स्थित इंडिया हैबिटेट सेंटर के एम्फीथिएटर में इस महोत्सव का 2 नवंबर को प्रख्यात कन्नड़ लेखक तथा ज्ञानपीठ विजेता डॉ चंद्रशेखर कम्बार तथा मणिपुर के प्रख्यात रंगकर्मी श्री रतन थियम ने उद्घाटन किया। श्री कम्बार ने अपने संबोधन वक्तव्य में कहा, "हमारी भाषाओं के संरक्षण के लिए हमें बहुत कुछ करने की जरूरत है।" श्री थियम के उद्गार थे, "सभी भाषाओं और बोलियों को मैं सलाम करता हूँ जिसने हमारे साहित्य को रचा और उसे बचाया।" उद्घाटन सत्र में 'पुरानी बोली नया दौर : बोली इज बैक' विषय पर विमर्श, काव्य पाठ तथा मैथिली कवि विद्यापति के जीवन से संबंधित मिथ पर आधारित 'उगना रे' की प्रख्यात नृत्यांगना शोवना नारायण द्वारा नृत्य प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम के शेष दो दिनों में मणिपुरी, मैथिली, कन्नड़, उर्दू, अँग्रेजी, ओड़िया, मराठी, कश्मीरी तथा हिंदी में संबंधित भाषा के किसी विषय विशेष पर विमर्श के अनेक सत्र चले। इसके अलावा, सिनेमा-साहित्य कथा-पटकथा पर भी विमर्श हुआ एवं पॉपुलर कल्चर पर विद्वानों के विचार सामने आए। इस अवसर पर गायन के कार्यक्रम भी हुए। महोत्सव के तीनों दिन एक पुस्तक प्रदर्शनी भी लगी रही, जिसमें एनबीटी का स्टॉल आकर्षण का केंद्र रहा।

विदित हो कि इंडिया हैबिटेट सेंटर द्वारा आयोजित इस महोत्सव को एनबीटी द्वारा समर्थन दिया गया था। उद्घाटन-अवसर पर ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर की गरिमामयी उपस्थिति रही।

मेवात में 'कहानी से नाटक तक'

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया भारत सरकार एवं प्रोजेक्ट कन्सर्न इंटरनेशनल इंडिया, एन.जी.ओ., के संयुक्त तत्वावधान में तावडू ब्लॉक के भंगोह गाँव में 17 नवंबर, 2012 को 'कहानी से नाटक तक' कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 150 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का संचालन मशहूर रंगकर्मी एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के वरिष्ठ स्नातक श्री हाफिज खान ने किया। इस कार्यशाला में बच्चों ने न केवल एक कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करने की कला को सीखा बल्कि मशहूर साहित्यकार प्रेमचंद की महान कृति 'ईदगाह' का मंचन भी किया।

इस कार्यशाला का आयोजन राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह (14-20 नवंबर) के अवसर पर किया गया। नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया प्रति वर्ष राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के दौरान देश भर में पुस्तक एवं पठन प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करता है। मेवात में पुस्तक प्रोन्नयन हेतु यह पहली गतिविधि थी।

बांग्ला लेखक सुनील गंगोपाध्याय नहीं रहे

सुपरिचित बांग्ला साहित्यकार और साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय का 23 अक्तूबर, 2012 को कोलकाता में निधन हो गया। वे 78 साल के थे। अपने छह दशकों के दीर्घ लेखकीय यात्रा में उन्होंने 200 से अधिक किताबें लिखीं। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखा, लेकिन कविता को उन्होंने 'पहला प्यार' कहा था। उन्हें साहित्य अकादेमी समेत अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए थे। उनके लिखे अनेक उपन्यासों पर फिल्म भी बनी थी।

पठन-आदत के लिए अभियान–'किताबें'

'किताबें' युवाओं में पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने हेतु संपूर्ण भारत में महीने भर तक चलने वाला अभियान है जिसका आयोजन नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया और सिनेदरबार (पुस्तक प्रोन्नयन की दिशा में कार्यरत एक गैर-सरकारी संगठन) ने किया है। इंटरनेट और सामाजिक मीडिया ने युवाओं के मन को पुस्तकों से दूर कर दिया है। युवाओं की पसंद के माध्यम और तकनीकी का उपयोग करते हुए उनमें पुस्तकों और पाठकीयता के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने हेतु, एक ऑनलाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है जिससे एक लेखक के रूप में उनकी क्षमता में निखार भी आएगा।

'फैंटेसी' की विस्तृत विषयवस्तु पर आधारित, यह ऑनलाइन प्रतियोगिता 6 से 12 और 13 से 17 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के दो वर्गों के लिए खुली है। पहले वर्ग के बच्चे 'इंडियन सुपरहीरो' प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं, जिसमें वे एक नए भारतीय सुपर हीरो की नई कल्पना का सृजन कर सकते हैं, जिसमें कुछ अद्भुत शक्ति हो जिसका उपयोग भारत की भलाई के लिए किया जा सके। दूसरे वर्ग के बच्चे 'साइंस फिक्शन स्टोरी' (विज्ञान गद्य कथा) प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं, जिसमें उन्हें अन्य ग्रहों के जीवों, काल यात्रा, रोबो, भविष्य की दुनिया या फिर 'दुनिया से बाहर' की किसी भी वस्तु पर एक लघु विज्ञान कथा की रचना करनी है।

प्रतियोगिता में चयनित सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा प्रकाशित करने पर विचार किया जाएगा।

यह प्रतियोगिता देश में पुस्तकों और पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने हेतु, नेशनल बुक ट्रस्ट की एक पहल राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह समारोह का एक हिस्सा है। इन सारी गतिविधियों का आयोजन बच्चों और युवाओं को पुस्तक संसार के करीब लाने और उनमें जीवन के एक अंग के रूप में पढ़ने की आदत का संचार करने हेतु किया जा रहा है।

भागीदारी निःशुल्क है! बस, www.qitaabe.com देखें!

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/12/2012

चिट्ठीघर

पुस्तकें हमें जन-जीवन से जोड़ती हैं और हमें सदैव तरोताजा रखती हैं। निःसंदेह, पुस्तकों का पठन सभी के लिए लाभकारी है। पुस्तकों से बड़ा कोई मित्र नहीं है। इस विचार को प्रमुखता से **संवाद** हम तक पहुँचा रहा है। **संवाद** के अंक हमें पुस्तकों की दुनिया से रू-ब-रू कराते हैं। आपकी इस पहल के लिए जितनी तारीफ की जाए, कम है।

गजानन पाण्डेय, काचीगुडा, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश

जयपुर पुस्तक मेला की रिपोर्ट जानकारीपरक थी। जनजातीय क्षेत्रों में केंद्रित नेशनल बुक ट्रस्ट के कार्यक्रम इन क्षेत्रों के लोगों के लिए उपयोगी रहने की उम्मीद है। पुस्तक समीक्षा स्तंभ उपयोगी है।

प्रो. शामलाल कौशल, रोहतक, हरियाणा

संवाद नियमित प्राप्त होता है। इसके लिए हृदय से आभार। पत्र के माध्यम से पुस्तक संबंधी विभिन्न गतिविधियों की जानकारी मिलती रहती है; इससे मन प्रसन्न होता है। नई किताबें अपने शीर्षक से ही अपना अंतरंग व्यक्त कर देती हैं। पुस्तकों के संबंध में जानकारी पत्र का वैशिष्ट्य है।

आज के कंप्यूटर और नेट के युग में किताबों पर धूल जमने का डर भी मन में लगा रहता है, परंतु आपने पुस्तक मेलों के माध्यम से जो जनजागरण अभियान चलाया हुआ है उसका प्रतिफल तो प्राप्त होगा ही। पुस्तक मनुष्य का दोस्त सही अर्थ में है।

केशर मेश्राम, नागपुर, महाराष्ट्र

संवाद का नया अंक हाथ आया–फिर से नई जानकारी लाया। नए प्रकाशनों के साथ ही ट्रस्ट के कार्यक्रमों की सचित्र प्रस्तुति–आपकी प्रशंसा में करेगा हर पाठक/सुधिजन स्तुति।

संवाद–है सचमुच में लाजवाब निर्विवाद।

प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

संवाद / यही दिलाता याद / पढ़ो किताबें / रहो आबाद।

शब्बन खान 'गुल', बहराइच, उ.प्र.

सेवानिवृत्ति

श्री बलराज सूद 39 वर्षों तक नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया में सेवारत रहने के पश्चात 30 नवंबर, 2012 को जेस्टेटनर ऑपरेटर के पद से सेवानिवृत्त हो गए। श्री सूद ने 1973 में एक चतुर्थश्रेणी कर्मचारी के रूप में ट्रस्ट में सेवारंभ किया था। 1982 में क्रमशः दफ्तरी एवं पैकर के रूप में पदोन्नत होकर 1994 में लाइब्रेरी अटेंडेंट बने। तदंतर, 2003 में जेस्टेटनर ऑपरेटर के रूप में पदोन्नति पाई और इसी पद से सेवानिवृत्त हुए। अपनी लंबी सेवावधि में श्री सूद ने ट्रस्ट के डिस्पैच, संपादकीय, लेखा, प्रदर्शनी एवं उत्पादन विभागों में काम किया। ट्रस्ट के सभी सहयोगी श्री सूद के स्वस्थ एवं दीर्घायु होने की कामना करते हैं।

दिल्ली-एनसीआर में एनबीटी की पुस्तक प्रदर्शनियाँ

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर 19 से 23 नवंबर, 2012 की अवधि में दिल्ली एवं एनसीआर (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) के 22 स्कूलों में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया। एनसीआर में शामिल थे–गुड़गाँव, फरीदाबाद, नोएडा एवं गाजियाबाद। पुस्तकों पर 20% छूट का प्रावधान था।

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070